बाइबल टीचर

वर्ष 20 | सितम्बर 2023 | अंक 10

सम्पादकीय

आपकी आर्थिक स्थिति कैसी है?

जब हम छोटे थे तब से हमें यह सिखाया जाता था कि अपने पैसे को कैसे इस्तेमाल करना है? आज की युवा पीढ़ी के लोग पैसे का उचित इस्तेमाल करना भूल गये हैं। आज अक्सर यह देखने को मिलता है कि लोग कर्जा लेकर तथा क्रेडिट कार्ड से अपने खर्चे चलाते हैं। कई बार हम अपने खर्चों को इतना बढ़ा लेते हैं कि हमारा उधार के बगैर काम नहीं चलता। हमारी जितनी आय है उसके अनुसार अपने जीवन को चलाना चाहिए। कई लोग झूठी बढ़ाई के लिये अपने आपको दूसरों के सामने बड़ा बनाकर दिखाने का प्रयत्न करते हैं जो कि उचित नहीं है। यह भी अक्सर देखा जाता है कि कई परिवारों में पैसे के कारण तनाव रहता है। कई बार पैसे के कारण कई पति-पत्नी तलाक ले लेते हैं और यह इसलिये होता हैं क्योंकि हमने अपने खर्चे बड़ा लिये है और किसी ने यह बात सही कही है कि हमें पैर उतने ही पसारने चाहिये जितनी लम्बी चादर है। मसीही लोगों को झूठी शानों-शौकत से दूर रहना चाहिए और कभी भी दूसरों की शान देखकर, जीवन में कम्पीटीशन न करें।

यदि कोई मसीही परिवार झूठी शान में रहकर अपने कर्ज को नहीं चुकाता तो यह एक अच्छी बात नहीं है। एक बहुत ही बुरी बात जो समाज में दिखाई देती है कि लोभ और लालच में आकर लोग बुराई में फस जाते हैं, आप 1 तीमु. 6:10 को पढ़िये यहां प्रेरित पौलुस कहता है कि ''रूपये का लोभ सब प्रकार की बुराईयों की जड़ है।'' वह कहता है जिसे प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए कितनों ने विश्वास से भटक कर अपने आपको नाना प्रकार के दुखों से छलनी कर लिया है। (पद 10)। हमारी समस्या यह है कि हम रूपये के लोभ में ऐसा फंस जाते हैं जैसे कि एक चूहा रोटी को चूहेदान में देखकर उसकी ओर आकर्षित हो जाता है और चूहेदान में फंस जाता हैं। इसीलिये बाइबल कहती है कि ''तुम न तो संसार से और न संसार की वस्तुओं से प्रेम रखो: यदि कोई संसार से प्रेम रखता है तो उस में पिता का प्रेम नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसार में है अर्थात शरीर की अभिलाषा और आंखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड वह पिता

की और से नहीं परन्तु संसार की ओर से है। संसार और उसकी अभिलाषा दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है, वह सर्वदा बना रहेगा।'' (1 यूहन्ना 2:15-17)। जो मसीही संसार की तरफ अधिक आकर्षित होते है उनका ध्यान आत्मिक बातों से धीरे-धीरे हटने लगता है और आपने शायद कभी ध्यान दिया होगा कि वे आराधना में भी आना बन्द कर देते हैं या फिर आराधना में कभी-कभी आते हैं।

एक और बीमारी जो अक्सर कलीसिया में देखने को मिलती है वो है आपस में उधारी का खेल खेलना। कभी कभार मुसीबत आने पर लोग एक दूसरे से पैसे ले लेते हैं जिसमें कोई बुराई नहीं है, परन्तु कई लोग उधारी पर जीना पसन्द करते हैं। और ऐसा अक्सर देखा जाता है कि पैसे उधार लेने के बाद लोगों की नियत खराब हो जाती है और वे दूसरों का पैसा लौटाना नहीं चाहते। कलीसिया में पैसे के लेन देन से लोगों को दूर रहना चाहिए। एक और बात जो देखने को मिलती है कि पैसे के इस लेन देन में अक्सर कई लोग आपसी मनमुटाव के कारण आराधना में आना बन्द कर देते हैं। मेरी सलाह मसीही बहनों भाईयों के लिये यही होगी कि अपने सुख विलास और झूठी शान के लिये उधारी न करें। यदि आपकी आय कम है तो उसके अनुसार अपने खर्चे भी करें। कई लोग आमदनी से अधिक खर्चा करते है और फिर दूसरों से उधार लेते हैं। यीशु ने एक बार अपने चेलों को शिक्षा देते हुए कहा था कि चौकस रहो, और हर प्रकार के लोभ से अपने को बचाए रखो। क्योंकि किसी का जीवन उसकी सम्पत्ति की बहुतायत से नहीं होता (लूका 12:15)। इसलिये मित्रों, हमेशा याद रखिये कि आय पर ध्यान न देकर अधिक से अधिक व्यय करना ठीक नहीं है।

बाइबल मसीहीयों से कहती है कि ''तुम दाम देकर मोल लिये गये हो'' (कुरि. 6:19, 20)। परमेश्वर ने हमें पृथ्वी पर यह जीवन दिया है ताकि हमारे जीवन उसके लिये महत्वपूर्ण बनें। परमेश्वर की सेवा करें, ईमानदारी से उसकी सेवा करें। (रोमियों 12:1-2)। अपने आपको ऐसी समस्याओं में न फंसायें जिससे आपका जीवन व्यर्थ कठिनाईयों में फंस जायें। हम चंचल धन से दूर रहें। अपने जीवन को व्यर्थ खर्चों से दूर रखें। एक संतोषजनक जीवन जीयें। यदि प्रभु ने दाल रोटी दी है तो उसके लिये धन्यवादी हो। (1 तिमु. 6:17-18)। अपने चन्दे को प्रभु के कार्य के लिये दें। (2 कुरि. 8)। कलीसिया के कार्य के लिये अधिक से अधिक दें, क्योंकि वचन कहता है, ''लेने से देना धन्य है'' (प्रेरितों 20:35)।

यीशु खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने को आया

सनी डेविड

हमेशा की तरह आज हम फिर से प्रभु यीशु के सम्बन्ध में अपने पाठ में विचार करेंगे। यूं तो जगत में और भी बहुत सी ऐसी बातें हैं जिनके ऊपर इस समय हम विचार कर सकते हैं। या फिर हम किसी अन्य

मनुष्य के जीवन या कामों के ऊपर विचार कर सकते हैं। परन्तु सबसे अधिक हमें यीशु के सम्बन्ध में देखने की आवश्यकता है। क्योंकि यीशु का सम्बन्ध हमारी आत्माओं से है। यीशु का जन्म आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व हुआ था। वह परमेश्वर की इच्छा तथा उसकी सामर्थ से उत्पन्न हुआ था। उसके जन्म से सैकड़ों वर्ष पूर्व परमेश्वर ने उसके जन्म लेने के सम्बन्ध में अपने भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बताया था। उसका जन्म अन्य मनुष्यों की नाई नहीं हुआ था। परन्तु वह परमेश्वर की इच्छा से एक विशेष उद्देश्य के लिए जगत में आया था। बाइबल के पुराने नियम में हम यीशु के बारे में अनेकों भविष्यद्वाणियों को पढ़ते हैं। ये भविष्यद्वणियां बाइबल के पुराने नियम में यीशु के जन्म से सैकड़ों वर्ष पूर्व लिखी गई थी। प्रभु यीशु के जन्म से आठ सौ वर्ष पूर्व यशायाह नाम के एक भविष्यद्वक्ता ने उसके बारे में लिखकर इस प्रकार कहा था:

''इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा। सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और उसका नाम इम्मानूएल, (अर्थात ईश्वर हमारे संग है) रखेगी।'' (यशायाह 7:14)। किन्तु ''जो समाचार हमें दिया गया उसका किसने विश्वास किया? और यहोवा का भुजबल किस पर प्रगट हुआ? क्योंकि वह उसके सामने अंकुर की नाई, और ऐसी जड़ के समान उगा जो निर्जल, भूमि में फूट निकले; उसकी न तो कुछ सुँदरता थी कि हम उसको देखते, और न उसका रूप ही हमें ऐसा दिखाई पड़ा कि हम उसको चाहते। वह तुच्छ जाना जाता और मनुष्यों का त्याग हुआ था; वह दु:खी पुरूष था, रोग से उसकी जान पहिचान थी; और लोग उस से मुख फेर लेते थे। वह तुच्छ जाना गया, और हमने उसका मूलय न जाना। निश्चय उसने हमारे रोगों को सह लिया और हमारे ही दुखों को उठा लिया; तौभी हमने उसे परमेश्वर का मारा-कूटा और दुर्दशा में पड़ा हुआ समझा। परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी, कि उसके कोड़े खाने से हम लोग चंगे हो जाएं। हम तो सबके सब भेड़ों की नाई भटक गए थे; हम में से हर एक ने अपना-अपना मार्ग लिया; और यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया। (यशायाह 53:1-6)।

यशायाह की इस भविष्यद्वाणी के लगभग आठ सौ वर्ष के बाद जब यीशु का जन्म हुआ तो इस भविष्यद्वाणी का एक-एक अंश यीशु के जीवन में पूरा हुआ। यद्यपि यीशु ने सब लोगों के साथ भलाई ही की, उसने उन्हें रोगों से चंगा किया तथा उन्हें शारीरिक और आत्मिक भोजन दिया। तौभी उन्होंने उसे तुच्छ जाना और उसके महत्व को न पहिचाना। वह वास्तव में त्यागा हुआ था, क्योंकि किसी ने भी उसका मूल्य न जाना। विभिन्न धार्मिक संगठनों के लोगों ने उसे मरवा डालने की साजिश गढ़ी। उसके अपने ही एक चेले ने चांदी के चंद सिक्कों की खातिर उसे उसके बैरियों के हाथ पकड़वा दिया। उसके एक अन्य चेले ने सब लोगों के सामने उस से इन्कार कर दिया। और वाकी उसके उसके सब चेले भी उसे छोड़कर भाग गए। वह एक अपराधी की नाई, झूठे आरोपों के आधार पर क्रूस के ऊपर लटकाया गया। जहां परमेश्वर ने भी उसका साथ छोड़ दिया। और उसने यह कहकर अपने प्राण छोड़ दिये, कि हे मेरे परमेश्वर तू ने मुझे क्यों छोड़

दिया? (मत्ती 26:46)। सचमुच में यीशु मनुष्यों का त्यागा हुआ और परमेश्वर का मारा-कूटा ठहरा। मनुष्यों ने उसे छोड़ दिया क्योंकि वे उसके कारण अपने प्राणों का जोखिम नहीं उठाना चाहते थे। और परमेश्वर ने उसे छोड़ दिया, क्योंकि वह पापियों तथा अधर्मियों के संग गिना गया। वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, जिस प्रकार से कि भविष्यद्वक्ता यशायाह ने कहा था, और वह हमारे ही अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया। हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, ताकि उसके बलि-दान के कारण परमेश्वर के साथ हमारा मेल हो जाए। प्रभु यीशु मसीह के जगत में आने से पहिले मनुष्य जंगल में खोई हुई भेड़ के समान था। क्रुस पर यीशु के बलिदान के पूर्व प्रत्येक मनुष्य अपने-अपने अधर्म में खोया हुआ था। परन्तु परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु को हम सब का छुटकारा बनाया। उसने यीशु पर हम सबके अधर्म के बोझ को रख दिया और अपने अद्‌भुत ज्ञान से उसे क्रूस के ऊपर एक अपराधी की नाई दण्ड दिलवाया। इसका अर्थ यह है, मित्रो, कि आज आप और मैं प्रभु यीशु मसीह के बलिदान के कारण परमेश्वर से अपने प्रत्येक पाप की क्षमा प्राप्त कर सकते हैं। हम उसके द्वारा अपने प्रत्येक पाप से छुटकारा प्राप्त करके अपने परमेश्वर के साथ अपना मेल कर सकते हैं! यही कारण है, कि मैंने आरम्भ में कहा, कि हमें सबसे अधिक यीशु के बारे में जानने की आवश्यकता है। क्योंकि यदि हम संसार का सारा ज्ञान प्राप्त कर लें परन्तु यीशु को न जानें तो हमारा जीवन व्यर्थ ठहरेगा। इसलिये, कि यीशु के बिना हम अपने इस जीवन के बाद सदा के उस अंधकार में खो जाएंगे जहां से कभी कोई छुटकारा न होगा।

यीशु मनुष्य के लिए परमेश्वर के उद्धार का मार्ग है। परमेश्वर जगत में सब मनुष्यों का उद्धार करना चाहता है। वह सब मनुष्यों को पाप से मुक्त करना चाहता है। इसीलिए उसने पुत्र यीशु को, जो आदि से उसके साथ स्वर्ग में वचन की नाईं विद्यमान था, मनुष्य बनाकर जगत में भेज दिया। अपनी मनसा से उसने यीशु को हमारे अपराधों के लिए घायल किया, और हमारे अधर्म के कामों के हेतु उसे कुचला अर्थात उसे नाश करवाया। उसी ने यीशु के ऊपर जगत के सारे लोगों के पापों को लेकर लाद दिया। इसलिए जब यीशु क्रुस के ऊपर मरा तो वह पापियों के लिए मरा। वह जगत के सब लोगों के पापों का प्रायश्चित करने को मरा। पवित्र बाइबल में एक जगह लिखा है, कि परमेश्वर ने अपने प्रेम को जगत पर इस रीति से प्रगट किया कि जब हम सब पापी ही थे तो उसका पुत्र मसीह हमारे लिए मरा। (रोमियों 5:8)।

परन्तु यशायाह कहता है, कि इस समाचार पर किसने विश्वास किया? हजारों साल पहिले किया गया यह प्रश्न आज भी हमारे लिए बड़ा ही महत्वपूर्ण है। कौन इस बात पर विश्वास करता है कि यीशु परमेश्वर की मनसा से जगत के पापों के प्रायश्चित के लिए क्रूस पर मारा गया? क्या आप इस बात पर विश्वास करते हैं? शायद आज बहुत ही थोड़े लोग हैं जो इस बात पर सचमुच में विश्वास करते हैं। और इसका मुख्य कारण यह है कि आज अधिकांश लोग अपने आपको अपनी रीति पर धर्मी समझते हैं। वे अपने जीवन में यीशु की आवश्यकता को अनुभव नहीं करते जैसे जब हम स्वस्थ होते हैं, तो डॉक्टर की दुकान के पास से हम बिना ध्यान दिये निकल जाते हैं। उसकी याद हमें केवल

तभी आती है जब हम बीमार पड़ते है। जब हम रोग से पीड़ित होकर यह अनुभव करते हैं कि अब हमारी हालत बिगड़ती ही जा रही है तो हमें उसकी आवश्यकता पड़ती हैं। बहुतेरे लोग आज अपने जीवन में यीशु की आवश्यकता को इसलिए अनुभव नहीं करते क्योंकि वे अपने जीवन में पाप की उपस्थिति और उसके परिणाम की ओर कोई ध्यान नहीं देते।

जब यीशु इस पृथ्वी पर था तो वह अधिकांश रूप से उन लोगों के बीच उपदेश देता था जिन्हें अन्य लोग बड़ा ही पापी तथा अधर्मी समझते थे। इस कारण वे लोग यीशु पर यह दोष लगाने लगे कि वह पापियों के साथ बैठता और उनके साथ खाता है। परन्तु यीशु ने उनकी बात सुनकर उनसे कहा, ''भले-चंगों को वैद्य की आवश्यकता नहीं, परन्तु बीमारों को है : मैं धर्मियों को नहीं, पापियों को बुलाने आया हूं।'' (मरकुस 2:17)। एक अन्य स्थान पर यीशु ने कहा, कि मैं खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने आया हूं। (लूका 19:10)।

यीशु दुर्बलों और पापियों का मित्र था। और आज भी वह अपने पास केवल उन्हीं लोगों को बुलाता है, जो पाप से छुटकारा पाना चाहते हैं। उसके ये शब्द हमारे लिए आज भी एक महान निमन्त्रण हैं, ''हे सब परिश्रम करनेवाले और बोझ से दबे हुए लोगों, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।'' (मत्ती 11:28)। पाप के जीवन से विश्राम ! और अनन्त जीवन का विश्राम ! यीशु ने कहा है, कि जो मुझमें विश्वास लाएगा और बपतिस्मा लेगा मैं उसका उद्धार करूंगा। (मरकुस 16:16)। इसका अर्थ यह है, कि जब हम यीशु में यह विश्वास लाते हैं कि वह हमारे पापों का प्रायश्चित है, और पाप के जीवन से मुंह मोड़कर जल के भीतर दफन होकर बपतिस्मा लेते हैं, तो हम यीशु की मृत्यु तथा उसके गाड़े जाने की समानता में उसके साथ जुट जाते हैं। और जब हम बपतिस्मा लेकर पानी के भीतर से बाहर आते हैं तो हम एक नए जीवन में प्रवेश करते हैं। (रोमियों 6:3-6; यूहन्ना 3:3, 5)। अर्थात हम खोए हुए थे, परन्तु यीशु के द्वारा फिर से हम अपने परमेश्वर के पास वापस आ गए हैं। कैसा अद्‌भुत सुसमाचार है यह !

मित्रो, मेरा विश्वास है, कि जबकि आज यीशु ने आपको अपने वचन के द्वारा ढूंढ़ लिया है, तो आप उसकी आज्ञा को मानकर अवश्य उस से ही उद्धार पाएंगे। परमेश्वर यीशु के पास आने में आपकी सहायता करे।

यीशु जगत का उद्धार करने के लिए पापियों के बदले में मर गया, वह कब्र के भीतर गाड़ा गया और हमारा उद्धार करने को फिर से जी उठा। यह हमारे लिए परमेश्वर का सुसमाचार है। और उसकी यह आज्ञा है कि हम सब उस यीशु में विश्वास लाएं, और अपने-अपने पापों से मन फेरकर पाप के लिए मर जाएं और जिस प्रकार एक मरा हुआ इंसान कब्र के भीतर गाड़ दिया जाता है वैसे ही बपतिस्में की जल-रूपी-कब्र के भीतर दफन हो जाएं, और उसमें से बाहर निकलकर उस नए जीवन में चलें जो हमें यीशु से मिलता है।

सुनना

जे. सी. चोट

यदि कोई किसी अफवाह को सुनता है, तो क्या वह उस पर पूरा भरोसा रखकर विश्वास कर सकता है? क्या वह कह सकता है कि यही बात सत्य है? बिना किसी प्रमाण के वह दावे के साथ नहीं कह सकता कि यह बात सही है, यही बात आत्मिक बातों पर भी लागू होती है। आप भी धार्मिक रूप से कई बातों के विषय में सुन सकते हैं परन्तु जब तक वे परमेश्वर के वचन पर आधारित न हों उनका कोई महत्व नहीं है। न मेरे लिए और न ही आपके लिए। वास्तव में किसी गलत बात पर विश्वास करके हम अनंत जीवन से सदा के लिए वंचित रह सकते हैं।

परन्तु हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता सत्य को जानना है। शायद गलत बात को सुनकर हमें लगे कि यह सही है परन्तु इससे हमारा उद्धार नहीं होगा। ऐसी बहुत सी बातें हैं जो आप धार्मिक रूप से करना चाहते होंगे, परन्तु यदि आपका मार्गदर्शन सत्य के द्वारा नहीं होता है तो आपके कार्य व्यर्थ होंगे। सत्य क्या है? यीशु ने परमेश्वर से प्रार्थना करते हुए कहा था, ''सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर, तेरा वचन सत्य है'' (यूहन्ना 17:17)। इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर ने जो कहा था वह सत्य है। और यीशु कहता है, कि तुम ''सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतन्त्र करेगा'' (यूहन्ना 8:32)।

आपको मनुष्य की नहीं बल्कि परमेश्वर की बात को सुनना चाहिए। यीशु तथा परमेश्वर के वचन को सुनना चाहिए। परमेश्वर ने कहा था, ''यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूं, इसकी सुनो'' (मत्ती 17:5)। हम फिर पढ़ते हैं कि ''पूर्व युग में परमेश्वर ने बाप-दादों से थोड़ा-थोड़ा करके और भांति-भांति से भविष्यवक्ताओं के द्वारा बातें करके। इन अन्तिम दिनों में हमसे पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उस ने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि रची है'' (इब्रानियों 1:1, 2)। एक समय था जब परमेश्वर मूसा तथा भविष्यवक्ताओं के द्वारा बातें करता था परन्तु अब वह अपने पुत्र के द्वारा हमसे बातें करता है। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या हम अन्त के दिनों में रह रहे हैं (प्रेरितों 2:16, 17) । हां, हम अन्त के दिनों में ही रह रहे हैं और ये अंत के दिन तब से हैं जब से प्रभु यीशु मरकर मृतकों में से जी उठा था। इसलिए आज हमें उसकी सुननी है। हम उसकी कैसे सुनें? क्या किसी आवाज के द्वारा? या स्वप्न देखकर? या मनुष्यों की शिक्षाओं पर आधारित किसी पुस्तक को पढ़कर? नहीं! केवल परमेश्वर के वचन पर आधारित शिक्षाओं को मानकर जो बाइबल में लिखी हैं। यूहन्ना कहता है, ''यीशु ने और भी बहुत से चिन्ह चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गए; परन्तु ये इसलिये लिखे गए हैं कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ'' (यूहन्ना 20:30, 31)।

सत्य को सुनने के कई तरीके हैं। हो सकता है कि कोई पढ़ने के द्वारा सुने, दूसरों शब्दों में, हम इसे इस प्रकार कह सकते हैं कि जब कोई वचन को पढ़ता है या कोई उसे वचन को पढ़कर सुनाता है, तो वह पौलुस पतरस तथा यूहन्ना की बातों को उन्हें सुना रहा होता है। हो सकता है कि कोई किसी प्रचारक को सुनकर परमेश्वर की इच्छा को जाने। परन्तु तब भी हमें प्रचारक की बातों पर बिना बाइबल से मिलाए, स्वीकार नहीं करना चाहिए। बाइबल से हमेशा मिलाकर देखें कि जो बातें बोली गई हैं क्या वे वचन के अनुसार हैं या नहीं? हमें केवल यूं ही सुनकर विश्वास नहीं कर लेना चाहिए कि यह किसी बड़े प्रचारक ने कहा है इसलिए इसे मान लो। परमेश्वर के वचन को सामने रखकर मिलाना चाहिए कि ये बात जैसे बोली गई वैसा ही है भी या नहीं?

इस बात के महत्व को समझते हुए कि हमने सत्य को सुना है और केवल सत्य को जाना है, हमें यीशु की इस बात को याद रखना चाहिए जो उसने उस समय के लोगों से कही थी कि ''तुम पवित्रशास्त्र में ढूंढ़ते हो, क्योंकि समझते हो कि उसमें अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है, और यह वही है, जो मेरी गवाही देता है'' (यूहन्ना 5:39)।

फिर मसीहियों के नाम लिखते हुए पौलुस कहता है, ''अपने आप को परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित होने न पाए, और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो'' (2 तीमुथियुस 2:15)। हम यह भी पढ़ते हैं कि बिरीया में रहने वाले लोगों को भले कहा गया; क्योंकि वे प्रतिदिन बड़ी लालसा से वचन ग्रहण करते थे, और पवित्र शास्त्र में से ढूंढ़ते थे कि ये बातें यूं ही हैं भी या नहीं? (प्रेरितों 17:11)।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में मनपरिवर्तन की सारी घटनाओं में हम देखते हैं कि लोगों ने पहले परमेश्वर के वचन को सुना। सच्चाई सुनने के बाद उनके मनों में विश्वास उत्पन्न हुआ (रोमियों 10:17)। और आज भी हम ऐसा ही करते हैं।

बेशक सुनना बड़ा आवश्यक है परन्तु फिर भी हमें एक बात अपने ध्यान में रखनी आवश्यक है कि हमें सही बात को सुनना है। केवल सुनना ही आवश्यक नहीं है। बहुत से लोगों ने सच्चाई को सुना हुआ तो है, परन्तु उनका उद्धार नहीं हुआ है। क्यों? क्योंकि यदि किसी ने कुछ सुना है तो उसे उसके विषय में कोई फैसला करना चाहिए कि ये बातें सत्य हैं या नहीं। मान लो कि किसी को यह खबर मिलती है कि उसे एक नया घर मिलेगा और यह तभी मिलेगा जब वह कुछ शर्तों का पालन करेगा। परन्तु यदि वह उन शर्तों का पालन नहीं करता तो उसे वह घर नहीं मिलेगा। किसी को यह पता चलता है कि प्रभु यीशु के द्वारा उद्धार मिलता है परन्तु यदि वह उद्धार पाने की शर्तों को नहीं मानता है तो उसे कभी भी उद्धार नहीं मिलेगा।

सुनने के लिए हमेशा तत्पर रहें परन्तु चौकस रहें कि आप क्या सुनते हैं। किसी बात को इसलिए स्वीकार न कर लें कि वह देखने में बहुत अच्छी है। परन्तु उस बात को परखें, उसके विषय में अच्छी तरह से छानबीन करें, और तब अगर वह सही है तो उसे मानें।

सबसे से बड़ा मिशन

लुई जी. हेल

ग्रेट कमीशन को सरसरी तौर पर पढ़ना बड़ा ही आसान है कि ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो'' (मरकुस 16:15)। मसीह उन लोगों से बात कर रहा था जो संसार के पापों के कारण उसकी मृत्यु के गवाह थे। वे उसके जी उठने के भी गवाह थे।अब उन्हें सारे संसार में जाकर सारी सृष्टिके लोगों को यह कहानी बताने का मिशन दिया जा रहा है। हम पक्का नहीं बता सकते। वे अपने मिशन के महत्व को पूरी तरह से समझते थे या नहीं। हमारे पास इस बात का पुखता सबूत है कि उन्हें यह समझ नहीं थी कि उसमें अन्यजाति संसार भी है। पतरस को यह तब समझ में आया था जब उसे कुरनेलियुस और उसके घराने के लोगों को वचन सुनाने के लिए भेजा गया था। यहूदी अगुवे चाहे अन्यजातियों को स्वीकार करने के लिए मान गए पर वे चाहते थे कि उनकी शर्तों को मानें। वे इस बात पर जोर देते थे कि अन्यजाति लोग पहले ''यहूदी'' बनें (खतना करवाकर), तभी उन्हें मसीही विश्वास में ग्रहण किया जाए।

क्या हमें मालूम है कि ग्रेट कमीशन आज भी प्रभावी है? यह युग के अंत तक प्रभावी रहेगा (मत्ती 28:20)। जितना प्रेरितों के लिए आवश्यक था उतना ही हमारे लिए आवश्यक यह है कि हम सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार सुनाएं। लोग आज भी पाप में हैं। सुसमाचार आज भी उद्धार के निमित परमेश्वर की सामर्थ है। ''फिर जिस पर उन्होंने विश्वास नहीं किया, वे उसका नाम कैसे लें? और जिसके विषय में सुना नहीं उस पर कैसे विश्वास करें? और प्रचार बिना कैसे सुनें? (रोमियों 10:14)। तो इसका हल क्या है ''अत: विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है'' (रोमियों 10:17)।

जब कलीसियाएं इकट्ठे होकर, कुछ गीत गाने, कुछ प्रार्थनाएं करने, घट रही घटनाओं पर संदेश सुनने, प्रभु भोज में भाग लेने, कुछ चंदा दे देने, घर जाकर धर्म को एक सप्ताह के लिए आराम करने देने से संतुष्ठ हो जाएं तो साफ है कि बड़े मिशन का कोई इरादा नहीं है जो उन्हें दिया गया है।

हमारी संगति परमेश्वर की योजना का अनिवार्य भाग है। आराधना महत्वपूर्ण है। परमश्वेर की स्तुति होनी आवश्यक है। परमेश्वर पाप में खोए हुए लोगों को सुसमाचार सुनाने के द्वारा भी आदर पाता है। लोग सुनने से इन्कार कर सकते हैं। यह उनका और परमेश्वर का मामला है। वे सुनकर मानने से इन्कार कर सकते हैं। यह भी उनका और परमेश्वर का मामला है। परन्तु उन्हें सुनने में सहायता करने की जिम्मेदारी हमारी है, और यह हमारा और परमेश्वर का मामला है। अपने मिशन को समझें और इसे पूरा करें।

''मसीह यीशु का''

ऑवन डी आल्ब्रट

पौलुस ने लिखा कि वह मसीह यीशु का प्रेरित है। ''यीशु'' यूनानी भाषा के समेवने नाम से लिया गया था, यह इब्रानी भाषा के ल्मींनं के समान है। ल्मी और वींनं के इस मेल का जिसे पुरने नियम में ''यहोशू'' (निर्गमन 17:9) अनुवाद किया गया है, इसका अर्थ है ''परमेश्वर उद्धार है'' या ''परमेश्वर उद्धार कर्त्ता है।'' लमी या ली परमेश्वर के नाम ''याहवेह'' जिसे इस्त्राएलियों द्वारा जाना जाता था यह इसका एक लघु रूप है। इब्रानी शब्द लौं का अर्थ है ''बचाता है।'' स्वर्गदूत ने यीशु के सम्बन्ध में यूसुफ को बताया था, ''उसका नाम यीशु रखना क्योंकि वह अपने लोगों का उनके पापों से उद्धार करेगा'' (मत्ती 1:21) उसे ''यीशु'' या ''परमेश्वर उद्धारकर्त्ता है'' सही ही कहा गया है। प्रेरितों 4:12 पतरस में कहा है, ''और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में और कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें।''

''खिस्तुस'' (बैतपेजवे) की तरह ''मसीह'' (उौंपंबी, ''मसीहा'') है जिसका अर्थ है ''अभिषिक्त।'' ''खिस्तुस'' और ''मसीहा'' उपाधियां हैं न कि नाम। पुराने नियम में लोगों को याजक (निर्गमन 28:41) राजा (1शमूएल 15:1) और भविष्यद्वक्ता के रूप में (1राजाओं 19:16) अभिषेक किया जाता था। यीशु के पास ये तीनों पद हैं (मत्ती 13:57; यूहन्ना 18:37; इब्रानियों 3:1) उसे इन पदों पर परमेश्वर द्वारा अभिषेक किया गया है (लूका 4:18)।

यीशु का शासन और याजकाई पृथ्वी से नहीं, बल्कि स्वर्ग से होते हैं: ''और यदि वह पृथ्वी पर होता, तो कभी याजक न होता,...'' (इब्रानियों 8:4)। यीशु परमेश्वर के सिंहासन के दाहिने हाथ स्वर्ग में याजक है (इब्रानियों 8:1), जहां से अब वह हर चीज पर राज करता है (इफिसियों 1:20-22; 1 पतरस 3:22)। जकर्याह नबी ने लिखा है, ''वही... महिमा पाएगा, और अपने सिहांसन पर विराजमान होकर प्रभुता करेगा। और उसके सिंहासन के पास एक याजक भी रहेगा, और दोनों के बीच मेल की सम्मति होगी'' (जकर्याह 6:13)। यीशु याजक के रूप में अपने शासन और पद में अपनी वापसी तक बना रहेगा, जो उसे परमेश्वर के दाहिने हाथ ऊंचा किया जाने के समय मिला था। उस समय वह अपना शासन त्याग देना (1 कुरिन्थियों 15:22-28)। उसका कोई सांसारिक राज्य या याजकाई नहीं होगी।

''यीशु मसीह'' का नाम और उपाधि पौलुस के लेखों में उन्नियासी बार मिलती है। इसके उल्टे क्रम ''मसीह यीशु'' का इस्तेमाल नब्बे बार हुआ है। यीशु पहले लगाया जाना मसीह के उद्धार करने वाले के रूप में उसकी पहचान पर जोर देता है। मसीह खिसतुस, उद्धारकर्त्ता के रूप में उसके पद पर जोर देता है। सम्भवतया क्रम में अन्तर पर बहुत जोर नहीं दिया जाना चाहिए।

''परमेश्वर की इच्छा से'' (1:1)

परमेश्वर की इच्छा से शब्दों का इस्तेमाल करते हुए पौलुस ने इस बात की पुष्टि की कि परमेश्वर ने उसे प्रेरित होने के लिए चुना है। प्रेरित होने के लिए वह न तो अपने आप चुना गया और न ही मनुष्यों द्वारा उसे ठहराया गया था। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि झूठे, अपने आप बने प्रेरित धोखा देने में सक्रिय थे (2 कुरिन्थियों 11:13)। पौलुस वास्तविक प्रेरित जिसे यीशु के प्रकाशन के द्वारा यह जिम्मेदारी दी गई थी। वह परमेश्वर के अनुग्रह के द्वारा प्रेरित था न कि अपनी खूबी या किसी की पसन्द के द्वारा (1 कुरिन्थियों 15:10)।

''परमेश्वर की इच्छा'' सारे इतिहास की मुख्य घटनाओं का केन्द्र है। इस तथ्य का कि कोई बात परमेश्वर की इच्छा के अनुसार हो रही है अर्थ यह नहीं है कि उसने इसे करवाया। जब लोग वह करते हैं जो सही होता है और परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं, तो वे उसकी इच्छा पूरी कर रहे होते हैं (1 यूहन्ना 3:22)। वह हमें अपनी इच्छा पूरी करने के लिए विवश नहीं करता, बल्कि जब हम अपने आपको उसकी सेवा में समर्पित कर देते हैं, तो वह हमारे द्वारा काम करता है (रोमियों 15:32; 2 कुरिन्थियों 8:5; फिलिप्पियों 2:13)।

परमेश्वर ने जैसे दूसरे महान लोगों को उनके जन्म से पहले चुना था (न्यायियों 13:5; यशायाह 49:1; यिर्मयाह 1:5; लूका 1:13-17), वैसे ही उसने पौलूस को उसके जन्म से पहले प्रेरित होने के लिए चुना। पौलुस ने लिखा है कि परमेश्वर ने ''मेरी माता के गर्भ ही से मुझे ठहराया और अपने अनुग्रह से बुला लिया'' (गलातियों 1:15)।

पौलुस के यह कहने कि वह ''परमेश्वर की इच्छा'' से प्रेरित था और यह कहने कि उसे विशेष गवाह बनने के लिए यीशु द्वारा ठहराया गया था, कोई उलझन नहीं है (प्रेरितों 26:16)। यीशु द्वारा पौलुस को नियुक्त करना पिता की इच्छा के अनुसार ही होगा क्योंकि यीशु उसी की इच्छा पूरी करने के लिए आया (यूहन्ना 5:30)।

''और भाई तीमुथियुस'' (1:1)

नये नियम के एक महत्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में तीमुथियुस का नाम चौबीस बार आया है। आयत 1 में पौलुस ने कहा कि तीमुथियुस ने अपना सलाम भेजा, जो सम्भवतया इस बात का संकेत था कि तीमुथियुस कुलुस्से के कुछ लोगों को जानता था। पौलूस ने 2 कुरिन्थियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों 1 थिस्सलुनीकियों, 2 थिस्सलुनीकियों और फिलेमोन में आरम्भिक सलाम में उसे शामिल किया। उसके नाम का होना यह सुझाव देता है कि पत्र लिखे जाने के समय वह पौलुस के साथ था। इफिसियों को लिखते समय पौलुस ने उसका नाम नहीं लिखा, चाहे उसकी जेल की अन्य पत्रियों की तरह यह पत्री भी उसी समय लिखी गई लगती है।

तीमुथियुस timotheos का अर्थ ''परमेश्वर का आदर करना'' या ''जो परमेश्वर को आदर देता है'' तीमुथियुस का पिता यूनानी था जबकि उसकी माता यूनीके एक यहूदी विश्वासिनी थी (प्रेरितों 16:1)। उसकी नानी लुईस के साथ उसकी मां ने उसे पवित्र शास्त्र की शिक्षा उसको बचपन से ही दी थी और उसके धार्मिक जीवन को जिससे

उसका धार्मिक जीवन बहुत प्रभावित था (2 तीमुथियुस 1:5; 3:15)। पौलुस ने उसे यीशु का वचन सिखाया था और सिखाने, जीने और सताव में स्थिर रहने में उसके लिए एक आदर्श था (2 तीमुथियुस 2:2; 3:10, 11, 14)। यह तथ्य कि पौलुस ने उसे ''हे पुत्र'' कहा (1 तीमुथियुस 1:12; 2:1) का अर्थ हो सकता है कि पौलुस ने ही उसे बपतिस्मा दिया हो। तीमुथियुस लुस्त्रा का रहने वाला था इसलिए उसने पौलुस को अपनी मिशनरी यात्रा के दौरान वहां पथराव होते हुए देखा हो सकता है (प्रेरितों 14:19; 2 तीमुथियुस 3:11)।

तीमुथियुस के नाम का होना किसी प्रकार से यह अर्थ नहीं देता कि उसने पौलुस के पत्र लिखने में उसकी सहायता की। तीमुथियुस ने पौलुस से सीखा था कि पौलुस ने तीमुथियुस से (2 तीमुथियुस 2:2)। अपना परिचय प्रेरित के रूप में बताकर और अपने आपको प्रेरित होने और तीमुथियुस के प्रेरित न होने का संकेत देकर पौलुस ने इस पद में अपने आपको बिल्कुल अलग किया। तीमुथियुस के पास वह अधिकार नहीं था, जो प्रेरित के पास था।

फिलिप्पियों और फिलेमोन में पौलुस द्वारा लिखे संदेश में पहली आयत में शामिल किए जाने के बाद तीमुथियुस का नाम नहीं है। परन्तु कुलुस्सियों के नाम पत्र के परिचय में पौलुस ने ''हम'' का इस्तेमाल जारी रखा जो उसने आयत 9 तक तीमुथियुस नहीं है। आयत 13 में ''हमें'' का अर्थ पौलुस और तीमुथियुस के साथ-साथ कुलुस्सियों भी है। आयत 23 में पौलुस व्यक्तिगत सर्वनाम ''में'' का इस्तेमाल करने लगा। पौलुस के पत्र में बाद में ''हम'' और ''हमें'' का इस्तेमाल करते हुए तीमुथियुस को शामिल किया गया हो सकता है (कुलुस्सियों 1:28; 4:3); परन्तु एक सम्पादकीय अर्थ में केवल अपनी बात करते हुए पौलुस ने इन शब्दों का इस्तेमाल किया हो सकता है।

इस बात में कि ''मेरे पास ऐसे स्वभाव का कोई नहीं, जो शुद्ध मन से तुम्हारी चिन्ता करे'' (फिलिप्पियों 2:20) इसमें तीमुथियुस के लिए पौलुस के मन में अत्यधिक सम्मान का पता चलता है। इसे दो प्रकार से लिया जा सकता है या तो और कोई नहीं था जो साथी मसीही लोगों के लिए पौलुस के साथ उतनी ही चिंता करने वाला हो या फिलिप्पियों के लिए और किसी को इतनी चिंता नहीं थी, जितनी तीमुथियुस को। पौलुस की बात का अर्थ सम्भवतया पौलुस के मन की बात थी।

अन्ताकिया में दूसरी मिशनरी यात्रा के समय उन मण्डलियों में दोबारा जाने के लिए जिन्हें उन्होंने अपनी पहली मिशनरी यात्रा के समय आरम्भ किया था अपने साथ बरनबास के भाई मरकुस को साथ लेने या न लेने पर पौलुस और बरनबास में झगड़ा हुआ था। इसका परिणाम यह हुआ था कि बरनबास मरकुस को लेकर साइपरस में चला गया था, जबकि पौलुस सिलास के साथ सीरिया और किलिकिया में से गया था (प्रेरितों 15:36-41)। लुस्त्रा में पहुंचकर पौलुस ने तीमुथियुस को अपने साथ लेना चाहा। यहूदियों का समर्थन पाने के लिए (1 कुरिन्थियों 9:21) उसने तीमुथियुस का खतना करवाया (प्रेरितों 16:1-3)।

खतना उद्धार के लिए शर्त नहीं है। (1 कुरिन्थियों 7:18, 19; गलातियों 5:6;

6:15)। पवित्र आत्मा की प्रेरणा से यरूशलेम में प्रेरितों और प्राचीनों ने यह आदेश दिया था कि मूसा की व्यवस्था को पूरा करना और खतना किया जाना अन्यजाति मसीही लोगों के लिए अनावश्यक था। पौलुस के अन्ताकिया में रहते समय इस प्रश्न पर बड़ा विवाद खड़ा हो गया था, यह बहस उनके यरूशलेम में पहुंचने तक जारी रही (प्रेरितों 15:1, 5, 24-29)। पौलुस ने चाहे तीमुथियुस का खतना किया था परन्तु उसने तीतुस का खतना करने से इन्कार कर दिया (गलातियों 2:3-5)। परिस्थितियां एक जैसी नहीं थीं। कलीसिया तीतुस पर खतना थोपने की कोशिश कर रही थी। इससे तीतुस की आजादी पर हमला होना था और अन्य मसीही लोगों में गलत संदेश जाना था कि खतना आवश्यक है। चाहे यह आवश्यक नहीं था फिर भी पौलुस ने खतना रहित अन्यजाति के साथ मिलने के दाग को मिटाने के लिए तीमुथियुस का खतना कर दिया। यहूदियों में प्रभावशाली ढंग से वह केवल इसी प्रकार प्रचार कर सकता था।

तीमुथियुस दूसरी मिशनरी यात्रा के दौरान और पौलुस के शेष जीवन में उसका साथी रहा था। चाहे वह एशिया माइनर से था पर अधिकतर पौलुस के साथ वह उसकी यूरोपीय सेवकाई में साथ रहा था, जिसका आरम्भ पौलुस को मकिदुनिया में जाने की बुलाहट के बाद हुआ था (प्रेरितों 16:9, 10)। तीमुथियुस का अन्तिम बार उल्लेख या तो 2 तीमुथियुस 1:2 में है या इब्रानियों 13:23 में, जहां कहा गया है, ''तुम यह जान लो कि तीमुथियुस हमारा भाई छूट गया है और यदि वह शीघ्र आ गया, तो मैं उसके साथ तुम से भेंट करूंगा।'' यदि तीमुथियुस उस समय पौलुस के साथ था तो यह प्रमाण हो सकता है कि इब्रानियों की पुस्तक पौलुस ने लिखी। इसके बाद तीमुथियुस के बारे में और कुछ पता नहीं है। उसके नाम का उल्लेख आरम्भिक मसीही साहित्य में नहीं मिलता है।

पौलुस ने तीमुथियुस को यहां और 2 कुरिन्थियों 1:1; और फिलेमोन 1; इब्रानियों 13:23 में हमारा भाई [ho, मूल में ''जीम''] कहा गया है। और कहीं भी कहीं उसने निश्चित उपपद के बिना ऐसे ही हवाले दिए (1 थिस्सलुनीकियों 1:1; 2 थिस्सलुनीकियों 1:1)। 1 तीमुथियुस 1:2 और 2 तीमुथियुस 1:2 में पौलुस ने उसे ''बच्चा'' और ''पुत्र'' कहा, जिसमें दोनों ही यूनानी शब्द जमादवद (''बच्चा'') से लिए गए हैं। तीमुथियुस के प्रति उसका लगाव ''मेरा सच्चा पुत्र'' और ''मेरा प्रिय पुत्र'' वाक्यांशों में दिखाई देता है। क्वारतुस (रोमियों 16:23), सोस्थिनेस (1 कुरिन्थियों 1:1) और कुरिन्थियों 1:1) और अपुलोस (1 कुरिन्थियों 16:12) के इस्तेमाल में भी निश्चित उपपद का इस्तेमाल किया गया है।

पौलुस ने तीमुथियुस को ''साथी प्रेरित'' नहीं कहा क्योंकि उसे प्रेरिताई का अधिकार नहीं मिला था। नये नियम में ''भाई'' और ''भाइयों''(कमसचीवे से) का इस्तेमाल शरीर में भाइयों (मत्तों 4:18; 12:47; प्रेरितों 1:14; 12:2; गलातियों 1:19), एक ही जाति या राष्ट्रीयता वालों (प्रेरितों 2:29; 3:17, 22; 7:2; 9:17) और आत्मिक भाइयों यानी मसीह में भाइयों (प्रेरितों 9:30; 10:23; 21:20; रोमियों 14:10) के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

''भाई'' का इस्तेमाल उपाधि के लिए नहीं किया जाता, बल्कि यह सम्बन्ध की एक

अभिव्यक्ति है। सब मसीही लोगों को मसीह में भाई के नाते बराबर माना जाता है (गलातियों 3:26-28); परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि उन्हें एक जैसी जिम्मेदारियां, दान या अधिकार मिले हैं (रोमियों 12:6-8)। इस तथ्य के आधार पर कि मसीह के चेले भाई हैं, अगुओं को विशेष उपाधियों वाले नाम नहीं अपनाने चाहिए, जो उन्हें दूसरे चेलों से अलग करते हैं (देखें मत्ती 23:8-10)।

हनन्याह ने पौलुस को उसके पाप धोए जाने से पहले ''भाई शाऊल'' कहा कइयों ने इससे और इस तथ्य से कि पौलुस ने यीशु को ''प्रभु'' कहा (प्रेरितों 22:16); कुछ लोगों ने यह निष्कर्ष निकाल दिया है कि पौलुस को नया जन्म दमिश्क के निकट यीशु का दर्शन पाने के समय मिला था (और इस तथ्य से कि पौलुस ने यीशु को ''प्रभु'' कहा; प्रेरितों 9:5, 22:8, 26:15) प्रेरितों 9:5 की टिप्पणी के रूप में एक अध्ययन बाइबल में यह व्याख्या मिलती है: ''आयतों 3-9 में दमिश्क में पौलुस के मन परिवर्तन का विवरण है। ... पौलुस को हनन्याह द्वारा 'भाई शाऊल' कहा गया है (आयत 17)। हनन्याह यह मान लेता है कि पौलुस एक विश्वासी है जिसने नया जन्म पा लिया है (यूहन्ना 3:3-5)।

कई अवसरों पर पतरस और पौलुस ने यहूदियों को जो मसीही नहीं थे, ''भाई'' या ''भाइयो'' कहा (प्रेरितों 2:29; 3:17; 7:2; 13:15, 26, 38; 22:1; 23:1, 5, 6; 28:17)। हनन्याह ने पौलुस को भाई मसीही के रूप में नहीं, बल्कि भाई यहूदी के रूप में बुलाया। पौलुस ने अभी परमेश्वर की संतान बनने के लिए बपतिस्मा नहीं लिया था, न ही उसे पवित्र आत्मा मिला था (प्रेरितों 9:17)। यीशु को ''प्रभु'' कहकर उसकी बात मानना काफी नहीं था (मत्ती 7:21; लूका 6:46)। उसे हनन्याह द्वारा बताया गया था कि अपने पापों को धोने के लिए प्रभु का नाम कैसे लेना है।

पौलुस ने तीमुथियुस को ''भाई'' कहा, क्योंकि वह न केवल पौलुस का मसीही भाई था बल्कि कुलुस्से और संसार भर के मसीही लोगों का भी भाई था। उसने कुआरतुस, सोस्थिन और अपलोस सहित अन्य मसीही लोगों को ''भाई'' कहा (रोमियों 16:23; 1 कुरिन्थियों 1:1; 16:12)। इन मामलों में पौलुस द्वारा ''भाई, सांसारिक भाई, कलीसिया में उपाधि या पदवी के लिए इस्तेमाल नहीं किया गया।''

कलीसिया के विषय में बाइबल क्या शिक्षा देती है?

क. बाइबल शिक्षा देती कि कलीसिया की स्थापना के विषय में भविष्यद्वणी में कहा गया था कि ''अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि यहोवा के भवन का पर्वत सब पहाड़ों पर दृढ़ किया जाएगा, और सब पहाड़ियों से अधिक ऊंचा किया जाएगा; और हर जाति के लोग धारा की नाईं उसकी ओर चलेंगे। और बहुत देशों के लोग आएंगे, और आपस में कहेंगे: जाओं, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर, याकूब के परमेश्वर के भवन

में जाएं; तब वह हमको अपने मार्ग सिखाएगा, और हम उसके पथों पर चलेंगे। क्योंकि यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से, और उसका वचन यरूशलेम से निकलेगा'' (यशायाह 2:2, 3)।

ख. बाइबल शिक्षा देती है कि यीशु मसीह ने अपनी कलीसिया बनाने की प्रतिज्ञा की थी। ''और मैं भी तुझ से कहता हूं कि तू पतरस (मूल में पैट्रोस, अर्थात् छोटा पत्थर) है, और मैं इस पत्थर (मूल में, पैट्रा, अर्थात विशाल चट्टान) पर अपनी कलीसिया बनाऊंगा, और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे'' (मत्ती 16:18)।,

ग. बाइबल हमें शिक्षा देती है कि इसकी स्थापना यरूशलेम में हुई। ''और उनसे कहा, 'यों लिखा है कि मसीह दु:ख उठाएगा, और तीसरे दिन मरे हुओं में से जी उठेगा, और यरूशलेम से लेकर सब जातियों में मन फिराव का और पापों की क्षमा का प्रचार, उसी के नाम से किया जाएगा'' (लूका 24:46, 47)। यह वचन प्रेरितों 2 अध्याय में पूरा हुआ, जब यरूशलेम में प्रेरितों ने मन फिराव व पापों की क्षमा का प्रचार किया।

घ. बाइबल शिक्षा देती है कि इसकी स्थापना पिन्तेकुस्त के दिन ई. स. 33 में हुई थी। इसका वर्णन प्रेरितों 2 अध्याय में मिलता है।

ड. बाइबल शिक्षा देती है कि इसने मसीह का नाम धारण करके उसके नाम की प्रतिष्ठा की। उसी कलीसिया की अन्य मण्डलियों के विषय में, पौलुस ने रोम की कलीसिया को लिखा, ''तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार'' (रोमियों 16:16)। 1 कुरिन्थियों 12:27 में इसे मसीह की देह कहा गया है परन्तु कुलुस्सियों 1:18 में हम पढ़ते हैं कि देह कलीसिया है अर्थात मसीह की कलीसिया।

ट. बाइबल शिक्षा देती है कि मसीह ने कलीसिया से इतना प्रेम किया कि उसने अपने आपको उसके लिए दे दिया। ''हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आपको उसके लिए दे दिया'' (इफिसियों 5:25)।

ठ. बाइबल शिक्षा देती है कि मसीह ने कलीसिया के लिए अपना लहू बहाया। ''इसलिये अपनी और पूरे झुण्ड की चौकसी करो जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है, कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लहू से मोल लिया है'' (प्रेरितों 20:28)।

ड. बाइबल शिक्षा देती है कि एक ही कलीसिया है। ''एक ही देह है ... ''(इफिसियों 4:4)। और इफिसियों 1:22, 23 में हम पढ़ते हैं कि देह ही कलीसिया है। यदि एक ही देह है और देह ही कलीसिया है तो फिर एक ही कलीसिया है।

ढ. बाइबल शिक्षा देती है कि मसीह कलीसिया का उद्धारकर्त्ता है। ''क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्त्ता है'' (इफिसियों 5:23)।

ण. बाइबल शिक्षा देती है कि मसीह कलीसिया का सिर है। ''और वही देह, अर्थात कलीसिया का सिर है; वही आदि है और मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहिलौठा कि सब बातों में वही प्रधान ठहरे'' (कुलुस्सियों 1:18)।

त. बाइबल शिक्षा देती है कि उद्धार पाने वालों को मसीह कलीसिया में मिला देता है। ''और जो उद्धार पाते थे, उनको प्रभु प्रतिदिन उनमें मिला देता था'' (प्रेरितों 2:47)।

थ. बाइबल शिक्षा देती है कि मसीह अपनी कलीसिया के लिए वापस आएगा। ''और उसे एक तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिस मे न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, वरन पवित्र और निर्दोष हो'' (इफिसियों 5:27)।

जीवन का वरदान

जेन मैकवोटर

''तुम्हें जीवन से प्रेम है, तो समय को बर्बाद मत करो क्योंकि जीवन उसी से बनता है'' (बैंजामिन फ्रैंक्लिन)।

हम में से बहुतों को लगता है कि समय ऐसी चीज है जिसे हम जैसे चाहे इस्तेमाल कर सकते हैं, परन्तु परमेश्वर हमें एक और नये दिन की सुबह और आज की शाम को खत्म होने तक को देने का देनदार नहीं है। समय का हर पल उसकी ओर से दिया गया बहुत खास वरदान है। एक अर्थ में हर नये दिन की शुरूआत में वह इस आग्रह के साथ कि हम इसका इस्तेमाल समझदारी से करें, हमारे हाथों में यह वरदान देता है।

जब हम किसी के आत्महत्या करने की बात को सुनते हैं तो आम तौर पर हमारी प्रतिक्रिया यह होती है कि जीवन को ऐसे अचानक खत्म कर देना नासमझी की बात है। परन्तु हम में से अधिकतर लोगों को इसे कतरा कतरा बर्बाद करने में कोई दिक्कत नहीं है। हम यह समझ नहीं पाते हैं कि समय को बर्बाद करने का मतलब इसकी हत्या करना है।

मन और तन के ''विश्राम'' में बिताया गया समय बर्बादी नहीं है और हर दिन के कार्यक्रम में उसे शामिल किया जाना चाहिए परन्तु दिन के अधिकतर घंटे लेटे रहने का सुस्ताने से बिलकुल कोई वास्ता नहीं है। न ही परमेश्वर या मनुष्य के प्रति हमारे कर्त्तव्यों से कोई वासता है। वे घंटे केवल बर्बाद किए गए हैं।

हर दिन को एक बड़ी बाल्टी के रूप में देखें। हम इसे बेसबॉलों से भर सकते हैं, पर फिर भी इसमें कंचों का एक डिब्बा रखने की जगह होगी। एक नजर देखकर हम कह सकते हैं। कि हमने सारी जगह भर दी है। पर रूकियें बॉलों तथा कंचों के बीच की दरारों में बंदूक की छोटी छोटी गोलियां काफी मात्रा में आ सकती हैं। जब हम यह सोचते हैं कि इससे काम बिलकुल खत्म हो गया है तो हमें यह जानकर आश्चर्य होता है कि उस बाल्टी में अभी भी कितनी रात आ सकती है। जब हमें लगे कि इसमें कुछ और नहीं आ सकता तब भी इसमें एक ओर चीज आ सकती है, हमें पता चलता है कि हम कितने गलत है जब उसमें बहुत सा पानी डाल दिया जाता है। इसी प्रकार से हम खाली समय का इस्तेमाल समझदारी से करके हर व्यस्त दिन में कई उपयोगी गतिविधियों को शामिल

कर सकते हैं। कहते हैं कि समय की रेत में पैरों के निशान बैठकर नहीं बने थे।

जैसे मत्ती के अध्याय 25 के कर्मचारियों को अपने-अपने तोड़ों का इस्तेमाल समझदारी से करने का हिसाब देना पड़ा था, वैसे ही हमें भी उस वरदान के देने वाले के सामने बताना पड़ेगा कि हम ने परमेश्वर के हर नये दिन के दान का इस्तेमाल कैसे किया। यदि हम ईमानदार हैं तो हमें इस दान के अपने भण्डारीपन पर कई बार शर्म आती है। परन्तु हर नया दिन एक अवसर है, एक नया मौका कि हम फिर से कोशिश करें। इस बहुमूल्य वरदान को यूं ही न समझें, क्योंकि ज़िन्दगी मिलेगी न दोबारा।

मेल कराने वालेः ठण्डे या गर्म

बायरन निकोल्स

हम मत्ती के अध्याय 5 के यीशु के धन्य वचनों से परिचित हैं। जिनमें से आयत 9 भी एक है: ''धन्य हैं वे, जो मेल कराने वाले हैं, क्योंकि वे परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।'' आइए मेल कराने वाले के इस विचार पर फिर से ध्यान करते हैं। इस बार शायद थोड़े अलग दृष्टिकोण से।

मेल कराना जबर्दस्त बात है और इसकी इच्छा पूरे तन-मन से करनी चाहिए। मेल इस कारण से होता है क्योंकि मेल करानेवाले होते हैं। हमें इस बात को समझना पड़ेगा कि जिस मेल (या शांति) की बात यीशु कर रहा है उसमें ऐसा नहीं है कि कोई झगड़ा न हो। यानी इसमें वे सब बातें भी हैं जो अच्छी हैं परन्तु आत्मिक रूप में स्वास्थ्यवर्धक हैं। इसमें वे बातें भी हैं जो मनुष्य की भलाई के लिए सहायक होती हैं। ये सब बातें मेल कराने वालों की गतिविधि से होती हैं।

मेल करानेवाले लोग शांतिप्रिय और शांत लोग होते हैं, परन्तु वे उससे भी कहीं बढ़कर होते हैं। क्योंकि वे शांति लाते या शांति का कारण बनते हैं। वे इतने सुलह-पसन्द होते हैं कि शांति लाने, शांति बहाल करने और शांति बनाए रखने के अपने प्रयास में वे अपना प्राण तक दाव पर लगा लेते हैं। बहुत से लोग जो शांत और शांति प्रिय होते हैं, मेल करानेवाले बनकर अपने आपको खतरे में डालने को तैयार नहीं हैं। मेल या शांति के लिए बहुत काम और प्रयास करना पड़ता है।

मेल करानेवाले लोग परमेश्वर की संतान हैं। उन्हें परमेश्वर और अपने साथ के लोगों से इतना प्रेम होता है कि आम तौर पर यह बहुत कठिन और अप्रिय होता है, जो उनके नाम के खराब होने का कारण बनता है। मेल करानेवाले लोग मेल कराने और शांति बनाए रखने के लिए परमेश्वर के माध्यमों के रूप में अपने आपको देने की कीमत चुकाने तक चले जाने को तैयार होते हैं। कई बार अपने प्रयासों को सफल न होते देखकर उन्हें दुःख और निराशा होती है। रोमियों 12:18 में पौलुस ने कहा कि ''जहां तक हो सके, तुम भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो।''

यहां पर हम देखते हैं कि कई बार मेल कराने वाले और शांत लोगों के प्रयासों के

बावजूद भी सुलह नहीं हो पाती। इस प्रकार से आवश्यक नहीं कि मेल कराने वाले हर बार मेल कराने के अपने प्रयासों में सफल हों। परन्तु नीतिवचन 12:20 में एक नियम बताया गया है जो आज भी लागू होता है: ''मेल की युक्ति करने वालों को आनन्द होता है।'' जो लोग यह जानते हुए कि वे ''शांति के राजकुमार'' (यशायाह 6:9) के पदचिन्हों पर चलते हैं, उन्हें परमेश्वर को उन्हें सच्चाई, धार्मिकता और आत्माओं के लिए अपने प्रेम के लिए इस्तेमाल करने देने से आनन्द मिलता है।

नियम का बलिदान देने से मिलने वाली शांति सच्ची शांति नहीं है। परमेश्वर के वचन को बदलकर जिससे लोग ''साथ चल'' सकें मेल कराना है। मैं पुरी ईमानदारी से और सच्चाई से कहता हूं कि वह व्यक्ति वास्तव में मेल करवाने वाला होने के बजाय झगड़ा करवाने वाला है।

जब मेल भंग होता है या इससे खतरा होता है, तो बहुत करके की जाने वाली सबसे आसान कार्यवाही यह है कि कोई कार्यवाही न की जाए, केवल समस्या को अनदेखा कर देना या यह दिखावा करना कि कोई समस्या ही नहीं। ''कालीन के नीचे'' मैल की कमी को साफ कर देने से बात नहीं बनती और निश्चय ही सुधार के लिए और शांति बनाए रखना या शांति बहाल करने के लिए कुछ नहीं होता। किसी समस्या को दूर करने और शांति बहाल करने के लिए उचित कार्यवाही न कर पाना मेल कराना नहीं बल्कि वास्तव में समस्या खड़ी करना है। ऐसे निर्णय वास्तव में शांति की कमी को बढ़ावा देते हैं। यह किसी रोग को शुरू होते ही ठीक न कर पाने के जैसा है, जिसका बाद में पता चलने पर हमें परेशानी होती है जो कि जान लेवा हो सकती है। इसे शुरू में सही इलाज करके रोका जा सकता है। समस्याओं से भागना और उनसे बचना शांति नहीं दिलाता। फिर से, यीशु ने यह नहीं कहा कि ''धन्य हैं वे जो मेल चाहते हैं या न कि वे जो इसकी खोज में हैं।'' इसके बजाय उसने कहा, ''धन्य हैं वे, जो मेल करानेवाले हैं, ...।''

मेल कराने वालों की मुख्य जिम्मेदार प्राचीनों (ऐल्डरों) की है। तीमुथियुस के अध्याय 1 में पौलुस ने प्राचीनों की कुछ योग्यताओं और जिम्मेदारियों की बात की है। आयत 9 के आरम्भ में वह घोषणा करता है कि प्राचीन (यानी पास्टर/पासबान/ऐल्डर) वे लोग होने चाहिये जिन्हें बाइबल का ज्ञान है और जो अपनी शिक्षा तथा भ्रम से शांति भंग करने वालों का सामना करके उनका मुंह बंद करके शांति लाने के लिए बाइबल का इस्तेमाल कर सकते हैं। ऐसे समय भी आते हैं जब उन लोगों के द्वारा जो ''अनुचित चाल'' चलकर शांति भंग करते है और प्रभु चाहता है कि हम ऐसे लोगों की ''संगति न करें'' (2 थिस्सलुनीकियों 3:6-15) और इस अप्रिय कार्यवाही में प्रचीनों का आगे आना आवश्यक है।

मेल करानेवाले आस्तिक सोच वाले लोग होते हैं जो केवल वर्तमान की नहीं बल्कि भविष्य में आगे की सोच रखते हैं। परिस्थिति देख सकते हैं। उन्हें केवल वर्तमान की चिंता नहीं होती बल्कि यह ध्यान होता है कि वर्तमान परिस्थितियों से आगे क्या हो सकता है।

बाइबल में परमेश्वर को कई बार ''शांति का परमेश्वर'' (रोमियों 15:33; 16:20; 2 कुरिन्थियों 13:11; फिलिप्पियों 4:9; 1 थिस्सलुनीकियों 5:23; इब्रानियों 13:20)

कहा गया है। मत्ती 5:9 में अपने धन्यवचन में यीशु ने वायदा किया कि मेल करानेवाले लोग ''परमेश्वर के पुत्र कहलाएंगे।'' यीशु कह रहा है कि मेल करानेवाले होकर हम परमेश्वर के स्वभाव के हो सकते हैं और इस प्रकार से हम परमेश्वर के जैसे बन सकते हैं। परन्तु याद रखें कि यह केवल उन्हीं लोगों के लिए कहा गया है जो सरगर्मी से मेल करानेवाले होकर इसे बढ़ावा देते हैं। परमेश्वर और मेल कराने वालों को सामने लाए, यानी उन मसीही लोगों को जिनमें मेल कराने और मेल बनाए रखने के लिए अपनी पूरी ताकत, हिम्मत और विश्वास हो।

यीशु और एक और कोस

माइकल एल. किंग

यीशु के मार्ग में ज्यों-ज्यों क्रूस की परछाई आगे आ रही थी त्यों-त्यों आप उसे थोड़ा और चलने की कोशिश करते हुए देख सकते हैं। यीशु ने उसका जो उसने पहले अपने पहाड़ी उपदेश में बताया था, थोड़ा सा और सार बता दिया (मत्ती 5:38-42)। हमारे प्रभु ने हम से कभी उन जगहों पर जाने को नहीं कहा है जहां वह खुद न गया हो, या वह काम करने को नहीं कहा है जो उसने आप न किया हो। जीवन के हर पहलु में वह हमारा ''अगुवा'' है। नमूने के लिए ''यीशु की ओर देखना'' और उसके अनुसार अपने जीवनों को ढालना हमारे लिए स्वाभाविक है। उन बातों पर थोड़ा विचार करें जिन पर यीशु ने दूसरे लोगों से थोड़ा अधिक जोर दिया। जब यीशु पिता की इच्छा को जिसने उसे भेजा था, पूरा करने के लिए आया (यूहन्ना 4:34) तो उसने उसे सौंपे गए काम को गम्भीरता से लिया। हमें भी अपनी जिम्मेदारी को गम्भीरता से लेकर ''प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते'' रहने को तैयार होना चाहिए (1 कुरिन्थियों 15:58)।

मसीह का सांसारिक जीवन ज्यादातर प्रार्थना में ही बीता। यीशु को दिन चढ़ने से पहले (मरकुस 1:35), बाग में (मत्ती 26:36) और अपनी मृत्यु से पहले, उसका मन बहुत भारी रहा होने पर (इब्रानियों 5:7) प्रार्थना करते हुए देखा जा सकता है। यीशु उनकी ओर से जो परमेश्वर के पास आते हैं, उनके सिफारिश करने वाले के रूप में प्रार्थना करता है (इब्रानियों 7:25)। परेशानी में और निर्णय लेने के समयों में, यीशु प्रार्थना करता था (यूहन्ना 7:5)। उसकी प्रार्थना में लगभग हमेशा दूसरों के लिए प्रार्थना होती थी।

प्रेम के क्षेत्र में यीशु वह सहने के लिए आगे बढ़ गया जिसमें अधिकतर लोग जाने को तैयार नहीं होते। वह फरीसियों और रोमियों से भी प्रेम करता था, जिन्होंने उसका जीना और पृथ्वी पर उसकी सेवकाई को कठिन कर दिया। वह अपने शत्रुओं से प्रेम करता था और उनके लिए उसने अपनी जान दे दी (यूहन्ना 15:13)। वह उनसे प्रेम करता था जो बदले में उससे प्रेम नहीं कर सकते थे या जिन्होंने उससे प्रेम नहीं करना था। प्रभु का प्रेम बातें अधिक और काम कम जैसा नहीं था, बल्कि उसने अपने जीवन और मृत्यु से अपने प्रेम को दिखा दिया (रोमियों 5:6-8)। सुसमाचार के अपने विवरण में लूका ने उसे

''जो यीशु आरम्भ से करता और सिखाता रहा'' बताया (प्रेरितों 1:1)।

बलिदान के क्षेत्र में कोई इससे बढ़कर क्या करने को कह सकता है? वह सबसे बड़ा दानी था। यीशु शहीद नहीं हुआ बल्कि स्वेच्छा से बलिदान हुआ (यूहन्ना 10:18)। यह प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति इस पूरी समझ के साथ दी गई है कि यीशु को क्रुस पर कीलों से ठोका गया। यानी ''क्रुस पर उसे बांधने वाली तार उद्धारकर्त्ता का प्रेम, परमेश्वर की सनातन मंशा के साथ वफादारी और परमेश्वर की इच्छा को पूरा करना था।''

हमें देने के अनुग्रह में ''बढ़ने'' को कहा गया है। जिसका अर्थ तय की गई या अपेक्षित राशि से बढ़कर देना है (2 कुरिन्थियों 8:7)।

पृथ्वी पर के अपने सफर के दौरान किए गए यीशु के काम पर विचार करें। यीशु ने पृथ्वी पर होने के अपने उद्देश्य को बताया ''मैं इसलिए नहीं आया कि मेरी सेवा टहल की जाए बल्कि इसलिए आया कि मैं सेवा करुं'' (मत्ती 20:28)। हम जानते हैं कि वह तब तक काम करता रहता था जब तक थक नहीं जाता था। जैसा कि कुएं पर मिलने वाली स्त्री के मामले में देखने को मिलता है (यूहन्ना 4:6)। पौलुस अपने काम में मसीह से प्रभावित था, क्योंकि वह दिन रात काम करता था (2 कुरिन्थियों 11:25)। आज बलिदानपूर्वक काम करने वालों की बड़ी आवश्यकता है। परमेश्वर का भय मानने वाले व्यक्ति के लिए जैसी वचबद्धता का होना आवश्यक है (1कुरिन्थियों 15:58)।

एक अंतिम क्षेत्र सम्भवतया, यीशु का अपने आपको सौंप देने को तैयार होकर सेवा के सामान्य स्तर से आगे निकल जाना है। परमेश्वर की इच्छा के आगे समर्पण करने में यीशु उदार था। पिता के साथ यीशु के सम्बन्ध को यीशु की इस बात से समझाा जा सकता है: ''मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता: ... क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूँ'' (यूहन्ना 5:30)। उसकी भाषा से परमेश्वर के प्रति उसके समर्पण का पता चलता था, क्योंकि प्रार्थना करते समय भी वह हर बार ''तेरी इच्छा पूरी हो'' ही कहता था (मत्ती 26:42)। यीशु का खोए हुओं को ढूंढ़ने और उनका उद्धार करने के द्वारा संसार में परमेश्वर के मिशन को पूरा करके अपने पिता को आदर देना था (इब्रानियों 10:7)। वास्तव में मसीह को जीवन के हर क्षेत्र में ''एक और कोस'' जाते हुए देखा जा सकता है। मसीह के पीछे चलने वालों को यह भरोसा दिया गया है कि यदि वे ''परमेश्वर के राज्य और धर्म की खोज पहले'' करते हैं तो ''ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी'' (मत्ती 6:33)।

इसके अलावा हम जानते हैं कि ''जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिए सब बातें भलाई ही को उत्पन्न करती हैं'' (रोमियों 8:28)। यह वचन यह वायदा करता है कि जब हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं (सीमा), तो सब चीज़ें मिलकर (सहयोग) हमारी भलाई के लिए (प्रतिफल) का काम करती हैं (कार्यवाही)। हमारे प्रभु ने यह नहीं कहा है कि हमें उसके लिए अपने प्रेम को दिखाने के लिए मर जाना पड़ेगा बल्कि वह हमसे यह कहता है कि हमें उसके लिए जीना पड़ेगा। ''अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है'' (रोमियों 12:2)।

हमें वह देने के लिए जिसके हम हक्कदार नहीं हैं, परमेश्वर और मसीह दोनों हद से बढ़ गए हैं। हमारे लिए अब समय है कि अब हम पुराने समय में यशायाह के द्वारा कही गई बात के अनुसार जवाब दें, ''तब मैं ने प्रभु का यह वचन सुना, मैं किस को भेजूं, और हमारी ओर से कौन जाएगा? तब मैं ने कहा, मैं यहां हूं। मुझे भेज'' (यशायाह 6:8)।

संकट

बैटसल बैरॅट बैक्स्टर

मसीह के लिए हमारे द्वारा किए गए हर काम में हम हर गतिविधि, हर कार्यक्रम, हर खर्च में अपनी जांच का एक बड़ा काम कर रहे हैं हमारे हर निर्णय हमारे मुख्य कार्य और उद्देश्य, आत्माओं के उद्धार को ध्यान में रखकर हों। हर गतिविधि का मूल्यांकन हो और हर गतिविधि पर विचार हो कि उसे नये सिरे से किया जाए या छोड़ दिया जाए।

हमें आत्माओं के उद्धार के लिए समर्पण की निजी वचनबद्धता और बलिदान करने की तैयारी का होना आवश्यक है। हम में से हर किसी के लिए अपने आपको, अपनी योग्यताओं को, अपने समय को, और पूरी तरह से सुसमाचार के प्रचार के लिए देने को तैयार रहना आवश्यक है। हमें विशेष रूप से प्रेरित पौलुस के स्मर्पण को याद करके उसकी समीक्षा करनी आवश्यक है। जब संसार भर के मसीही लोग आस-पास के लाखों और संसार के करोड़ों लोगों तक मसीह के सुसमाचार को ले जाने की सच्चे दिल से चाहेंगे, तभी सुसमाचार सुनाने के प्रयास काम आएंगे।

हमारे समय में लीडरशिप का संकट है। ऐल्डर, डीकन, प्रचारक, सम्पादक, रेडियो और टैलिविजन कार्यक्रमों के वक्ता तथा शिक्षक तथा अन्य सब प्रभावशाली लोग सुसमाचार के प्रचार के इस संकट में आगे लगें। लीडरों के लिए आगे लगना आवश्यक है ताकि लोग उनके पीछे चलें आम तौर पर हम दूसरे कामों को करने में जो महत्वपूर्ण और अच्छे काम हैं, इतने अधिक व्यस्त हो जाते हैं कि सुसमाचार प्रचार का काम पीछे पड़ जाता है। ऐल्डर और प्रचारक और लीडर प्रभु के काम में अन्य कामों में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि उन्हें लोगों से उनकी आत्मिक स्थिति पर बात करने और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए जो किया जाना चाहिए वह करने के लिए समय नहीं देते। हम में से हर किसी को अपने अंदर झांक कर यह सवाल पूछना आवश्यक है कि ''पिछले बारह महीने में मैं किसी को क्या मसीह में लाया?''

सुन्दर चर्च बिल्डिंगों, बाइबल स्कूल के बढ़िया कार्यक्रमों, और अन्य सभी सहूलतें होने के बावजूद अंधकार हमारे ऊपर बढ़ता जा रहा हैं। हम कम महत्व वाली बातों में इतने व्यस्त हैं कि जिन बातों को पहले किया जाना चाहिए था उन्हें भुला बैठे हैं। प्रधान बहुत अधिक हैं पर सेवक कोई नहीं है। हम सब में समर्पण बहुत कम है। हमारी असल समस्या इच्छा की नाकामी के कारण असर कम होने का संकट है, और यह स्मर्पण की नाकामी है। मसीहीयत में एक लीडर होने के नाते क्या आप एक सेवक हैं या शासक हैं? आज मसीह की कलीसिया को सेवकों की आवश्यकता है।

पुराने नियम की भविष्यवाणियों का मसीह में पूरा होना

बेटी बर्टन चोट

बाइबल के पुराने नियम में जिस प्रकार से परमेश्वर के बारे में अनेकों बातों का और भविष्यवाणियों का वर्णन हुआ है। ठीक वैसा ही हम नए नियम में यीशु मसीह के बारे में भी पढ़ते हैं।

पुराना नियम	नया नियम
यशायाह 40:3 : ''किसी की पुकार सुनाई देती है, जंगल में यहोवा का मार्ग सुधारो। हमारे परमेश्वर के लिये अराबा में एक राजमार्ग चौरस करो।''	**मत्ती 3:3 :** ''यह वही है, जिसकी चर्चा यशायाह भविष्यवक्ता के द्वारा की गई, 'जंगल में एक पुकारने वाले का शब्द हो रहा है, कि प्रभु का मार्ग तैयार करो। उसकी सड़कें सीधी करो'' बाद में यूहन्ना 1:29 में यूहन्ना ने स्वयं अपना परिचय यह कहकर देने के बाद कि वह यीशु मसीह के लिये ही मार्ग तैयार करने को भेजा गया है, यीशु को देखकर कहा था, ''देखो यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है।''
भजन संहिता 24:9, 10: ''...क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा। वह प्रतापी राजा कौन है? सेनाओं का यहोवा, वही प्रतापी राजा है।''	**1 कुरिन्थियों 2:8:** में लिखा है कि, ''जिसे इस संसार के हाकिमों में से किसी ने नहीं जाना, क्योंकि यदि वे जानते तो तेजोमय प्रभु को क्रूस पर न चढ़ाते।'' याकूब 2:1 के अनुसार, ''हमारे महिमायुक्त प्रभु यीशु मसीह....''
यिर्मयाह 23:5, 6 : ''यहोवा की यह भी वाणी है, देख ऐसे दिन आते हैं जब मैं दाऊद के कुल में एक धर्मी अंकुर उगाऊंगा, और वह राजा बनकर बुद्धि से राज्य करेगा, और अपने देश में न्याय और धर्म से प्रभुता करेगा...और यहोवा उसका नाम, ''यहोवा हमारी धार्मिकता'' रखेगा।''	**1 कुरिन्थियों 1:30:** ''परन्तु उसी की ओर से तुम मसीह यीशु में हो, जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा, अर्थात् धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा।''
यशायाह 8:13, 14 : ''सेनाओं के यहोवा ही को पवित्र जानना....और वह	**1 पतरस 2:7, 8:** ''तुम्हारे लिये जो विश्वास करते हो वह (यीशु मसीह) तो

शरण स्थान होगा, परन्तु इस्राएल के दोनों घरानों के लिये ठोकर का पत्थर और ठेस लगने की चट्टान....''

बहुमूल्य है, पर जो विश्वास नहीं करते उनके लिये जिस पत्थर को राज-मिस्त्रियों ने निकम्मा ठहराया था, वही कोने का सिरा हो गया।''

भजन संहिता 110:1: यह भविष्यवाणी दाऊद ने की थी, ''मेरे प्रभु यहोवा की वाणी यह है, ''तू मेरे दाहिने हाथ बैठ, जब तक कि मैं तेरे शत्रुओं को तेरे चरणों की चौकी न कर दूं।'' ''

प्रेरितों 2:34-36: आयतों में यूं कहा गया था, ''क्योंकि दाऊद तो स्वर्ग पर नहीं चढ़ा, परन्तु वह आप कहता है, 'प्रभु ने मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने बैठ, जब तक कि मैं तेरे बैरियों को तेरे पांवों तले की चौकी न कर दूं।' सो अब इस्राएल का सारा घराना निश्चित रूप से जान ले कि परमेश्वर ने यीशु को जिसे तुम ने क्रूस पर चढ़ाया, प्रभु भी ठहराया और मसीह भी।''

मलाकी 3:1: ''देखो, मैं अपने दूत को भेजता हूं, और वह मार्ग को मेरे आगे सुधारेगा, और प्रभु, जिसे तुम ढूंढ़ते हो वह अचानक अपने मन्दिर में आ जाएगा, हां, वाचा का वह दूत, जिसे तुम चाहते हो, सुनो, वह आता है, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।''

लूका 1:76: में, भविष्यवक्ता यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले के बारे में यूं लिखा है, ''और तू हे बालक, परम प्रधान का भविष्यवक्ता कहलाएगा, क्योंकि तू प्रभु का मार्ग तैयार करने के लिये उसके आगे-आगे चलेगा।''

यूहन्ना 1:30: यूहन्ना ने स्वयं यीशु मसीह के बारे में यूं कहा था: ''यह वही है जिसके विषय में मैंने कहा था, एक पुरुष मेरे पीछे आता है जो मुझसे श्रेष्ठ है, क्योंकि वह मुझसे पहले था।''

योएल 2:32: ''उस समय जो कोई यहोवा से प्रार्थना करेगा, वह छुटकारा पाएगा।''

1 कुरिन्थियों 1:2: ''....जो मसीह यीशु में पवित्र किए गए और पवित्र होने के लिये बुलाए गए हैं; और उन सबके नाम भी जो हर जगह हमारे और अपने प्रभु यीशु मसीह के नाम से प्रार्थना करते हैं।''

भजन संहिता 45:1, 6, 7 : में लेखक इस प्रकार कहता है, ''....जो बात मैंने राजा के विषय में रची है उसको सुनाता हूं....हे परमेश्वर तेरा सिंहासन सदा सर्वदा बना रहेगा; तेरा राज दण्ड न्याय का है। तूने धर्म से प्रीति की और दुष्टता से बैर

इब्रानियों 1:8, 9: में लिखा है, कि परमेश्वर अपने पुत्र, यीशु मसीह, के लिये कहता है, ''हे परमेश्वर तेरा सिंहासन युगानुयुग रहेगा: तेरे राज्य का राज दण्ड न्याय का राजदण्ड है। तूने धर्म से प्रेम और अधर्म से बैर रखा; इस कारण

रखा। इस कारण परमेश्वर ने, हां, तेरे परमेश्वर ने तुझ को तेरे साथियों से अधिक हर्ष के तेल से अभिषिक्त किया है।''	परमेश्वर तेरे परमेश्वर ने तेरे साथियों से बढ़कर हर्षरूपी तेल से तेरा अभिषेक किया।''
भजन संहिता 102:25-27 : यहां परमेश्वर के विषय में यूं लिखा है, ''आदि में तूने पृथ्वी की नींव डाली, और आकाश तेरे हाथों का बनाया हुआ है। वह तो नष्ट होगा, परन्तु तू बना रहेगा; और वह सब कपड़े के समान पुराना हो जाएगा। तू उसको वस्त्र के समान बदलेगा, और वह बदल जाएगा, परन्तु तू वही है, और तेरे वर्षों का अन्त नहीं होने का।''	**इब्रानियों 1:10** के अनुसार, यह बात वास्तव में परमेश्वर ने यीशु मसीह के बारे में कही थी, ''हे प्रभु आदि में तूने पृथ्वी की नींव डाली और स्वर्ग तेरे हाथों की कारीगरी है। वे तो नष्ट हो जाएंगे, परन्तु तू बना रहेगा; और वे सब वस्त्र के समान पुराने हो जाएंगे; और तू उन्हें चादर के समान लपेटेगा, और वे वस्त्र के समान बदल जाएंगे: पर तू वही है और तेरे वर्षों का अन्त न होगा।''
पुराने नियम के समय में, परमेश्वर ने कुछ विशेष लोगों को प्रेरणा देकर भविष्य में घटनेवाली अनेकों बातों को उनके द्वारा बाइबल की पुस्तकों में लिखाया था। उन में से कुछ भविष्यवक्ताओं ने यीशु मसीह के जन्म, जीवन और कामों के बारे में अनेकों बातों को पहले ही से लिखा था। परन्तु वे स्वयं उन बातों के बारे में कुछ भी नहीं जानते थे। केवल परमेश्वर ही जानता था। जैसा कि यशायाह 52:4 में लिखा है, ''प्रभु यहोवा यों भी कहता है।''	परमेश्वर की प्रेरणा से पहले ही से भविष्य में होनेवाली घटनाओं के बारे में लिखे जाने का वर्णन करके 1 पतरस 1:10, 11 में लेखक कहता है, ''इसी उद्धार के विषय में उन भविष्यवक्ताओं ने बहुत खोजबीन और जांच-पड़ताल की, जिन्होंने उस अनुग्रह के विषय में जो तुम पर होने को था, भविष्यवाणी की थी। उन्होंने इस बात की खोज की कि मसीह का आत्मा जो उनमें था और पहले ही से मसीह के दु:खों की और उसके बाद होनेवाली महिमा की गवाही देता था, वह कौन से और कैसे समय की ओर संकेत करता था।''

पुराने नियम से और नए नियम से इन सब बातों को पढ़कर हम किस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं?

वादा निभाना

पैट्रिक्स बोयंस

आप जानते हैं कि वो उसके लिए कितनी खास होगी। तभी तो उसने उसके लिए इतने पैसे खर्च कर दिए। इससे पहले उसने अब तक की सबसे महंगी चीज ब्लैकपूल की टी-शर्ट ही खरीदी थी और अब हीरे की अंगूठी खरीदना उससे बिल्कुल अलग होने वाला था। बात पैसे ही की नहीं थी।

यह उसका उसे अपनी दुल्हन बनने के लिए कहने का निस्वार्थ ढंग था, जिसके लिए उसने अपनी बात कहने के लिए इतना खर्च कर दिया।

अंगूठी उसके दिल की बात कहने के लिए थी। यह कहने का कि उसका इरादा प्रेम और सम्मान को दिखाना था, यह उसका सबसे बढ़िया ढंग था। उसने एक वादा निभाने की योजना बनाई। अंगूठी देने के बाद उसने अपने आपको दे देना था। यह उसकी गारंटी थी।

यूहन्ना जब पापों की क्षमा के लिए मन फिराव के बपतिस्मे का प्रचार करते हुए आया तो अपने से उस बड़े के बारे में बताया जिसने लोगों को पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देना था। पृथ्वी पर से जाने से पहले यीशु ने अपने चेलों को बताया कि उसने उस दान को भेजना था जिसका वादा पिता ने किया था, यानी जिसके विषय में उन्होंने उससे सुना था। पिन्तेकुस्त के उस यादगारी वाले दिन, पतरस जब खड़ा हुआ तो उसने लोगों को समझाया कि जी उठे यीशु ने वादा किए हुए पवित्र आत्मा को, जो उसे पिता की ओर से मिला था, उन पर बहा दिया था। उसने यह भी बताया कि यह वादा उनके लिए, उनके बच्चों के लिए और उन सब के लिए भी था जिन्हें प्रभु ने अपने पास बुलाना था। और पौलुस ने जब इफिसियों के नाम लिखा तो उसने मसीह में प्रतिज्ञा के ''पवित्र आत्मा की छाप'' के साथ छाप लगे होने की बात की।

बाइबल बार बार जोर देकर कहती है कि परमेश्वर वायदे निभाने वाला परमेश्वर है। नूह, अब्राहम, मूसा, यहोशू, दाऊद, एलिय्याह, दानिय्येल और विश्वास के और बहुत से लोग हैं जो परमेश्वर से अपने वचन को पक्का होने की गवाही देने को तैयार होंगे। जब परमेश्वर अपने आज्ञा मानने वालों को अपना पवित्र आत्मा देता है तो वह अपने किए सब वायदों को पूरा करने की गारंटी दे रहा होता हैं। पवित्र आत्मा, ''हमारी मीरास का बयाना है'' (इफिसियों 1:14)। वह ''बयाने में आत्मा को हमारे मनों में'' देता है (2 कुरिन्थियों 1:22; 5:5)। इन सभी आयतों में जहां ''बयाना'' शब्द का इस्तेमाल हुआ है वहां पर पौलुस यूनानी शब्द ''अराबोन'' (ततंइवद) का इस्तेमाल करता है। यह शब्द प्राचीनकाल के कारोबारी जगत में प्रण या पूरा भुगतान चुकाने का यकीन दिलाती पेशगी रकम होती थी। और उल्लेखनीय ढंग से, इस शब्द का इस्तेमाल आधुनिक यूनानी लोग मंगनी की अंगूठी के लिए करते हैं।

यदि हमारे अंदर परमेश्वर का आत्मा है तो हमें यह आश्वासन प्रतिज्ञा के अनुसार अनन्त मीरास (इब्रानियों 9:15), यानी ''अविनाशी, निर्मल और अजर मीरास'' का आश्वासन है (1 पतरस 1:3, 4)। सवाल यह नहीं है कि ''यदि मैं इतना अच्छा हूं या मैं इतनी प्रार्थना सभाओं में गया हूं तो मेरा स्वर्ग में जाना पक्का हो गया। ''बल्कि सवाल यह है कि ''यदि मेरे अंदर मसीह का आत्मा है तो मेरा स्वर्ग में जाना पक्का है।''

परमेश्वर ने यदि हमें अपना आत्मा दे दिया है, तो वह हमें अपनी मीरास भी अवश्य देगा।

जब परमेश्वर हमारे जीवनों में अपनी उपस्थिति के साथ कब्जा करने के लिए आता है तो वह अपने साथ सूटकेस भरकर नहीं लाता। वह कचरा साफ करने वाली गाड़ी लेकर और रहने की योजनाएं लेकर आता है। वह किरायेदार की तरह नहीं है जो उस बेकार वॉल पेपर को तब तक उतारने के लिए तैयार नहीं है, जब तक वह अपना मकान नहीं बदलता। परमेश्वर की योजनाएं हमें अपनी पसन्द और अपने पवित्र आत्मा से नये सिरे से फिर से सजाकर फिर से तैयार करने की हैं। हर सच्चे विश्वासी के जीवन के अंदर परमेश्वर की बनी रहने वाली उपस्थिति यह पक्का आश्वासन है कि हमारी आशा वास्तविक और सदा रहने वाली है। यदि उसने हमें अपनी अंगूठी दे दी है तो वह हमें अपने आपको भी दे देगा।